डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग
SNSRKS College Saharsa

सभा भवन

मोहनजोदड़ो में दुर्ग के दक्षिण की ओर 90 फीट लम्बाई और 90 फीट चौड़ाई के आकार का एक वर्गाकार भवन मिलता है. विद्वान इसे सभाभवन कहते है. इसमें ईंटों के 20 चौकोर स्तम्भों के अवशेष मिले है. संभवतः इन स्तम्भों पर भवन की छत टिकी हुई थी.

भवन के भीतर बैठने के निमित्त चौकियां बनाई गयी थी. लगता है की इस भवन का उपयोग सार्वजनिक सभाओं के लिए किया जाता था. इस सभाभवन को भी नियोजित रूप से बनाया गया प्रतीत होता है.

सैन्धव नगरों को देखने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है की सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों ने प्राचीन युग में भी नगर निर्माण की एक सुव्यवस्थित योजना का अविष्कार कर लिया था जो समकालीन विश्व में कहीं नहीं था. सभ्यतावासियों द्वारा परकोटे, गोपुर, अटारियों आदि से युक्त दुर्ग, वृहत स्नानागार सोपान तथा अनेक कक्षों वाला राजप्रसाद, धान्यागार, सभाभवन आदि की रचना निःसंदेह समुन्नत वास्तुकला की साक्षी है.

दुर्ग निर्माण योजना में वास्तुकारों की सतर्कता एवं कुशलता का पता चलता है. भवन यद्यपि सादे तथा अलंकरणरहित है तथापि उनकी सुदृढ़ता एवं निर्माण की उत्कृष्टता दर्शनीय है. इनकी तमाम विशेषताएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक है.